कसमार : महिलाओं ने बदल दी खेतों की रंगत

- 15 एकड़ में लहलहा रही तरबूजे की खेती
- आर्थिक मजूबती का बनेगा आधार, अब बाजार का इंतजार

दीपक सवाल ▷ कसमार

खेतों में तैयार फसल दिखातीं महिलाएं.

अब यह हैं उम्मीदें

उषा देवी, नूनीबाला देवी, अपराजिता देवी आदि महिलाओं का मानना है कि फसल काफी अच्छी हुई है. अगले 20 दिनों में बिक्री लायक हो जायेगी, तब तक लॉकडाउन खत्म हो गया तो बाजार भी मिल जाएगा. इससे काफी अच्छी आमदनी हो जायेगी. बताया गया कि अनुमानत : एक एकड़ में एक से डेढ़ लाख रुपये की आमदनी हो सकती है. प्रदान के मास्टर ट्रेनर स्थानीय मुरहुल निवासी साधुचरण महतो ने कहा : महिलाओं ने काफी मेहनत से फसल तैयार की है. इससे उन्हें आर्थिक मजबूती मिलेगी.

कोरोना संक्रमण के कारण देशव्यापी लॉकडाउन के बीच कसमार की कुछ महिलाएं खेती-किसानी के क्षेत्र में प्रेरक बनकर उभरी हैं. चार पंचायतों के नौ गांवों की करीब आठ दर्जन महिलाओं ने तमाम तरह के संकटों और समस्याओं के बीच कड़ी मेहनत के दम पर खेतों की रंगत बदल दी है. करीब 15 एकड़ भूमि पर तरबूज की खेती लहलहा उठी है. तैयार फसल को देखकर महिलाओं में काफी उत्साह है. उन्हें उम्मीद है कि लॉकडाउन के बाद बाजार मिलेगा और यह फसल उनकी आर्थिक मजबूती का एक बड़ा आधार साबित होगी.

कैसे हुई पहल : महिलाओं को खेती-किसानी में उन्नत बनाने में जैनामोड़ की स्वयं सेवी संस्था प्रदान की अहम भूमिका रही है. कुछ महीनों पहले प्रदान ने प्रखंड की कई पंचायतों में कार्य करना शुरू किया. इसी कड़ी में मुरहुलसुदी, सिंहपुर, हिसीम व दुर्गापुर पंचायत की महिलाओं के बीच समूह बनाकर उन्हें खेती के लिए प्रेरित किया. हांलांकि, यह बहुत आसान नहीं था. संस्था को भरोसा जीतने में कई तरह की परेशानियां उठानी पड़ी. एक्सपोजर में आवराडीह, सुतरी, पेटरवार आदि कई जगहों पर ले जाया गया. इसके बाद महिलाओं में उत्साह जग और खेती के लिए तैयार हुई. मुरहुलसुदी की उमा देवी, चांदमुनी देवी, कुसुमबाला, सरिता, उषाबाला, आशा, गुड़िया, कल्याणी, जयंती, बसुआ, सरस्वती, फाल्गुनी आदि महिलाओं ने एक एकड़ 63 डिसमिल भूमि पर तरबूजे की खेती शुरू कर दी. इसी तरह सूदी में एक एकड़ 85 डिसमिल, गोरियाकुदर गांव में एक एकड़ 41 डिसमिल, डाभाडीह में 50 डिसमिल, पूर्णा व शंकरडीह में एक एकड़ 69 डिसमिल, हिसीम में एक एकड़ 20 डिसमिल, पाड़ी गांव में 60 डिसमिल, खुदीबेड़ा में 2 एकड़ तथा दुर्गापुर में ढाई एकड़ अपनी अपनी भूमि पर तरबूजे की खेती महिलाओं ने शुरू कर दी. खुदीबेड़ा में तरबूज के अलावा पांच एकड़ पर करेला, लौकी, खीरा आदि की खेती भी हुई है. खेती को लेकर महिलाओं में उत्साह ऐसा हुआ कि सिंहपुर की पंचायत समिति सदस्य रेणु रंजन भारती ने भी 25 डिसमिल में तरबूज की खेती की.

इन कठिनाइयों से पार पाकर : महिलाओं को कई कठिनाइयों से पार पाकर खेती में खुद को साबित करना पड़ा है. शुरुआती दिनों में तरह-तरह की बातें होती थी. घर एवं खेती के कार्यों के बीच सामंजस्य स्थापित करना भी चुनौती थी. पर, महिलाएं घर के पुरुष सदस्यों का विश्वास जीतकर इससे निकल पाने में सफल हुई. खेती की सुरक्षा भी बड़ी चुनौती थी. गरमा फसल में काफी देखभाल करनी पड़ती है. इसकी एक वजह यह भी है कि इन दिनों मवेशियों को अधिक खुला छोड़ दिया जाता है. सिंचाई के लिए भी काफी पसीना बहाना पड़ा. सूदी, पाड़ी व मुरहुल में नदी व तालाब से सिंचाई की गयी. वहीं, गौरियाकुदर, हिसीम, पुरनाडीह व शंकरडीह की महिलाओं को कुआं से सिंचाई करनी पड़ रही हैं. प्रदान संस्था की को-ऑर्डिनेटर जय श्री व एक्जीक्यूटिव पीयूष ने बताया कि महिलाओं को खेती के लिए प्रेरित व फसल तैयार करने में संस्था को काफी मेहनत करनी पड़ी है. इसके लिए गांव के आजीविका कृषक मित्रो व मास्टर ट्रेनर को प्रशिक्षण दिया गया. बीज आदि उपलब्ध कराये गये. इंडिगो रिच के वित्तीय सहयोग से यह सब हो पाया है. कहा : लगातार मॉनीटरिंग का सुखद नतीजा देखने को मिल रहा है. अब बाजार मिल जाये तो महिलाएं निश्चित तौर पर आर्थिक रूप से मजबूत होंगी.